

राघव की आएगी बारात रंगीली होगी रात सखी री मैं नाचूंगी ।

खुशियां अंग न समात पुलक भई गात—सखी री मैं नाचूंगी ॥

पड़ पड़ पायनि देव मनाए गौरी गणेश को भोग लगाए

भए सब सुकृत सहाय आए रघुराय— सखी री मैं नाचूंगी ॥

हमरी किशोरी बड़ भाग मई है मिला दूलह जाको जग विजई है

जांका अनूपम शान करें सुर गान— सखी री मैं नाचूंगी ॥

रूप अनूपम सुन्दर जोड़ी दशरथ नन्दन जनक किशोरी

लजे हैं रति काम ऐसो है अभिराम— सखी री मैं नाचूंगी ॥

सम समिधी है राजा दोऊ हुआ न होगा इन सम कोऊ

फूले है इनके भाग बढ़े अनुराग सखी री मैं नाचूंगी ॥

मंगल गान करें सब सखियां प्रेम प्रफुलित जिनकी अखियां

बनी बने को दुलार सुखनि भरमार— सखी री मैं नाचूंगी ॥

सीय राघव करे भांवर फेरी सुख सुधा की होवे वर्षा घनेरी

देऊं पल पल आशीश राखो जगदीश— सखी री मैं नाचूंगी ॥

श्री सीयराम जब मण्डप निहारूं तन मन सब सर्वस्व वारूं

भए मैगसि मन मोद निरखि के विनोद— सखी री मैं नाचूंगी ॥